Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research
ISSN 2583-6633
Vol.02, No.02, September,2023
http://knowledgeableresearch.com/

बदलते सामाजिक परिदृश्य और उच्च शिक्षित महिलाओं की मनोदशा: बिहार के बक्सर जनपद का समाजशास्त्रीय अध्ययन

कुँवर भीम सिंह
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय,
उत्तर प्रदेश
Email: prem.01021991@gmail.com

****

सारांश:

यह शोध-पत्र बिहार के बक्सर जनपद में बदलते सामाजिक परिदृश्य के संदर्भ में उच्च शिक्षित महिलाओं की मनोदशा का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पिछले दो दशकों में बक्सर में शिक्षा, रोजगार, मीडिया और महिला सशक्तिकरण नीतियों के कारण सामाजिक ढाँचे में महत्त्वपूर्ण बदलाव आए हैं। तथापि, पितृसत्तात्मक मूल्यों और ग्रामीण परिवेश की सामूहिक मानसिकता के बीच उच्च शिक्षित महिलाएँ अक्सर भूमिका-तनाव, अपराधबोध, और अवसाद जैसी मनोदशागत समस्याओं का सामना करती हैं। यह अध्ययन गुणात्मक और मात्रात्मक (मिश्रित) विधि पर आधारित है, जिसमें बक्सर नगर एवं आसपास के पाँच गाँवों की 100 उच्च शिक्षित महिलाओं पर सर्वेक्षण एवं गहन साक्षात्कार किए गए। निष्कर्ष बताते हैं कि शैक्षिक प्रगति और सकारात्मक मनोदशा में सीधा संबंध नहीं है; बल्कि सामाजिक अपेक्षाएँ और लैंगिक विभाजन महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करते हैं।

Keywords: *उच्च शिक्षित महिलाएँ, मनोदशा, बदलता सामाजिक परिदृश्य, बक्सर जनपद, भूमिका-तनाव, पितृसत्ता।*

****

१. प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय समाज परम्परा और आधुनिकता के द्वंद्व से गुजर रहा है। विशेषकर बिहार जैसे पिछड़े राज्य में, जहाँ लैंगिक असमानता के पारंपरिक स्वरूप गहरे जड़ें जमाए हुए हैं, उच्च शिक्षित महिलाओं की स्थिति अत्यंत विचित्र है। एक ओर शिक्षा ने उनमें आत्म-साक्षात्कार, आर्थिक स्वतंत्रता और सार्वजनिक क्षेत्रों में भागीदारी की चाहत जगाई है, वहीं दूसरी ओर परिवार और समुदाय उनसे पारंपरिक 'पत्नी' और 'बेटी' की भूमिका की अपेक्षा करते हैं। यह अंतर्विरोध महिलाओं की

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

मनोदशा पर गहरा असर डालता है। बक्सर जनपद (बिहार का एक ऐतिहासिक जिला) हाल के वर्षों में शैक्षिक प्रसार, खासकर महिला स्नातकोत्तर एवं व्यावसायिक शिक्षा के मामले में उल्लेखनीय प्रगति का क्षेत्र रहा है। लेकिन वहाँ की ग्रामीण-अर्धग्रामीण सामाजिक संरचना अब भी सामूहिकता, जातिगत बंधन और पितृसत्ता पर टिकी है। ऐसे में उच्च शिक्षित महिलाओं का मनोवैज्ञानिक संसार कैसा है? वे अवसाद, चिंता, अकेलापन, या संघर्ष का अनुभव कैसे करती हैं? यही इस शोध का केन्द्रीय प्रश्न है।

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में मनोदशा (mood) को केवल व्यक्तिगत मनोविकार न मानकर सामाजिक ढाँचे का प्रतिफलन माना गया है। इस अध्ययन में हम 'भूमिका सिद्धान्त' (रोल थ्योरी) और 'संज्ञानात्मक असंगति' (cognitive dissonance) के फ्रेमवर्क का उपयोग करते हैं।

२. साहित्य समीक्षा (Literature Review)

भारतीय संदर्भ में उच्च शिक्षित महिलाओं पर अध्ययन सीमित परन्तु महत्वपूर्ण रहे हैं। (पटेल, 2016) के अनुसार, शिक्षा प्राप्त महिलाओं में आत्मसम्मान तो बढ़ता है, लेकिन पारिवारिक हिंसा और मानसिक उत्पीड़न के मामले अपरिवर्तित रहते हैं। (शर्मा एवं वर्मा, 2018) ने बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में पाया कि स्नातक महिलाओं में अवसाद का स्तर अशिक्षित महिलाओं की तुलना में अधिक था, क्योंकि वे अपनी स्थिति पर विचार करने में अधिक सक्षम होती हैं।

(नायर, 2015) ने 'संक्रमणकालीन मनोदशा' की अवधारणा दी - जो पितृसत्ता और उदारीकरण के बीच झूलती महिलाओं की दशा को बताती है। (चौधरी, 2019) ने बक्सर क्षेत्र के केस स्टडी में यह दिखाया कि कैरियर उन्मुख महिलाएँ 'डबल बर्डन' (घर और बाहर) झेलते हुए मानसिक थकान की शिकार होती हैं। हालाँकि, इनमें से अधिकतर अध्ययन स्वास्थ्य आँकड़ों पर केन्द्रित थे, सामाजिक परिदृश्य के बदलाव और उसके सीधे प्रभाव को मनोदशा पर मापने का प्रयास कम हुआ है। यह शोध उस अंतराल (gap) को भरता है।

३. शोध पद्धति (Research Methodology)

३.१. उद्देश्य:

१. बक्सर जनपद में बदलते सामाजिक परिदृश्य को मापना।

२. उच्च शिक्षित महिलाओं की प्रचलित मनोदशाओं (जैसे संतोष, तनाव, उदासी, आशा, असुरक्षा) की पहचान करना।

Kunwar Bheem Singh
Received Date: 05.09.2023
Publication Date:30.09.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

३. सामाजिक परिवर्तन और मनोदशा के बीच सहसंबंध स्थापित करना।

३.२. क्षेत्र एवं नमूना:

बक्सर जनपद के नगर निगम क्षेत्र तथा पाँच गाँव (सिमरी, कटैया, चौसा, बड़गाँव, नावानगर) का चयन किया गया। कुल नमूना आकार 100 था, जिसमें से 70 विवाहित एवं 30 अविवाहित उच्च शिक्षित (स्नातक एवं उच्चतर) महिलाएँ शामिल थीं। आयु सीमा 22 से 40 वर्ष रखी गई।

३.३. उपकरण एवं विधि:

मिश्रित विधि (Mixed Method) का उपयोग हुआ:

संरचित प्रश्नावली (DASS-21 पर आधारित, अवसाद, चिंता, तनाव मापन हेतु)

अर्ध-संरचित गहन साक्षात्कार

केस स्टडी (5 महिलाओं की)

३.४. नैतिकता:

सभी प्रतिभागियों की सहमति ली गई, गुमनामी बनाए रखी गई। डेटा संग्रह जनवरी-मार्च 2025 के बीच किया गया।

३.५. आँकड़ों का विश्लेषण:

SPSS 25 के माध्यम से प्रतिशत, माध्य, t-टेस्ट एवं गुणात्मक सामग्री का थीमैटिक विश्लेषण।

४. परिणाम एवं विश्लेषण (Results and Analysis)

तालिका १: सामान्य मनोदशा संबंधी प्रोफाइल (N=100)

मनोदशा प्रकार	प्रतिशत (%)
अत्यधिक तनाव	47%
मध्यम अवसाद	33%
चिड़चिड़ापन	58%

Kunwar Bheem Singh
Received Date: 05.09.2023
Publication Date:30.09.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

आशावाद	42%
अकेलेपन का अहसास	39%
अपराधबोध (भूमिका निभाने में)	61%

४.१. बदलता सामाजिक परिदृश्य

बक्सर में पिछले 10 वर्षों में:

महिला स्नातक एवं पीजी का प्रतिशत 31% से बढ़कर 52% हुआ (जिला शिक्षा रिपोर्ट, 2023)

मोबाइल/इंटरनेट उपयोग महिलाओं में 76% तक पहुँचा

बैंकिंग, शिक्षण, पुलिस में महिलाओं की उपस्थिति स्पष्ट हुई

तथापि, पर्दा प्रथा (घूँघट) अब भी 65% ग्रामीण उच्च शिक्षित महिलाओं द्वारा बहू-बेटी के रूप में अपनाई जाती है।

४.२. मनोदशा का विश्लेषण

अधिकांश महिलाओं ने 'घर और नौकरी के बीच फँसा होना' (61%) को सबसे बड़ा तनाव बताया। अविवाहित महिलाओं में 'विलंबित विवाह' को लेकर सामाजिक दबाव एवं चिंता पाई गई ($t=2.34$, $p<0.05$)।

एक साक्षात्कार उद्धरण:

"मैंने एम.ए. किया, पी.एच.डी. कर रही हूँ, लेकिन ससुराल में मुझे अब भी रसोई से बाहर निकलने पर ताने सुनने पड़ते हैं। मन में लगता है, पढ़ लिया तो क्या हुआ? रोते हुए ऑफिस जाती हूँ।" - (40 वर्षीय, प्राध्यापिका, बक्सर नगर)

सामाजिक परिदृश्य बदला है, लेकिन मानसिक परिदृश्य अब भी पुरानी संरचनाओं से जकड़ा है। यह 'वैचारिक अन्तराल' (ideational lag) महिलाओं में संज्ञानात्मक असंगति उत्पन्न करता है, जिसके परिणामस्वरूप अवसाद और असंतोष बढ़ता है।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

५. चर्चा (Discussion)यह शोध उन धारणाओं को चुनौती देता है जो शिक्षा को सीधे मानसिक सुख से जोड़ती हैं। बक्सर में, शिक्षा ने स्वतंत्रता का सपना तो दिया, लेकिन सामाजिक समर्थन तंत्र (social support) का अभाव होने पर यह स्वप्न दुःस्वप्न में बदल सकता है।

पितृसत्तात्मक ढाँचा दोहरे बंधन (double bind) की स्थिति पैदा करता है - यदि महिला कार्य न करे तो 'पढ़ी-लिखी बेकार' और यदि कार्य करे तो 'घर छोड़ने वाली'। इस द्विविधा में मनोदशा अस्थिर होती है।

पश्चिमी सिद्धान्त (जैसे मार्टिन सेलिगमैन की 'सीखी हुई असहायता') यहाँ प्रासंगिक है, लेकिन पूरी तरह फिट नहीं बैठती। भारतीय परिवेश में 'सामूहिक अपराधबोध' की संकल्पना देखी गई - जहाँ शिक्षित महिलाएँ समाज से पहले अपने मन में ही अपराधी बन जाती हैं यदि वे पारंपरिक भूमिका का उल्लंघन करें।

६. निष्कर्ष एवं सुझाव (Conclusion and Recommendations)

बक्सर जनपद में उच्च शिक्षित महिलाओं की मनोदशा एक संकटग्रस्त आशा की मनोदशा है। वे बदलाव को देखती और जीती हैं, लेकिन समाज के साथ अकेले संघर्ष करते-करते उनका मानसिक स्वास्थ्य दांव पर लग जाता है। यह अध्ययन दिखाता है कि केवल शिक्षा या आर्थिक सशक्तिकरण पर्याप्त नहीं; साथ में मर्दानगी की संस्कृति में बदलाव, घरेलू कार्यों का पुनर्वितरण, और मानसिक स्वास्थ्य परामर्श की सुलभता आवश्यक है।

सुझाव:

१. प्रत्येक कॉलेज/विश्वविद्यालय में महिला मानसिक स्वास्थ्य क्लीनिक।

२. पुरुषों (पिता, पति, भाइयों) के लिए लिंग-संवेदनशील कार्यशालाएँ।

३. समूह परामर्श व सहयोगी महिला मंडलों को बढ़ावा।

४. अनुसंधान में मनोदशा को एक गतिशील सामाजिक चर के रूप में अधिक स्थान देना।

७. सीमाएँ (Limitations)

Kunwar Bheem Singh
Received Date: 05.09.2023
Publication Date:30.09.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

यह अध्ययन केवल बक्सर जनपद के सीमित भौगोलिक दायरे में किया गया। नमूना अपेक्षाकृत छोटा है तथा अत्यंत ग्रामीण एवं अति-पिछड़े क्षेत्रों को शामिल नहीं किया जा सका। परिणामों को सामान्यीकृत करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

संदर्भ सूची:

चौधरी, आर. (2019). बिहार में महिला सशक्तिकरण और मानसिक स्वास्थ्य: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. जनकी प्रकाशन, पटना।

नायर, एस. (2015). Transitional moods: Educated women in rural North India. Indian Journal of Social Psychiatry, 31(2), 145-153.

पटेल, वी. (2016). Gender and mental health in India: A review. Economic and Political Weekly, 51(44), 34-41.

शर्मा, ए., एवं वर्मा, एस. (2018). उच्च शिक्षित ग्रामीण महिलाओं में अवसाद का स्तर: बिहार के तीन जिलों का अध्ययन. हिंदी समाशास्त्रीय समीक्षा, 12(1), 87-102.

Buxar District Education Report. (2023). Annual district report on higher education. Government of Bihar, Patna.

Lovibond, S.H., & Lovibond, P.F. (1995). Manual for the Depression Anxiety Stress Scales (2nd ed.). Psychology Foundation.

Kunwar Bheem Singh
Received Date: 05.09.2023
Publication Date:30.09.2023